International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-11-2022, Accepted: 08-12-2022, Published: 25-12-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 37-38

सूर्यबाला के कथा साहित्य में विदेशी चकाचौंध का वर्णन

Sonali Ghatak
शोधर्थिनी, आंध्रा विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश, भारत

सारांश
विदेशों की भौतिक चकाचौंध व पैसे की हवस ने जहाँ एक ओर भारतीय नौजवानों को अपनी ओर आकर्षित कर दिया है, वहीं दूसरी ओर देश में उचित रोजगार के अभाव में भी वे सैकड़ों मील दूर विदेशों की ओर पलायन करने के लिए मजबूर हो गए हैं। सूर्यबाला ने अपने कथा साहित्य में उस विदेशी चकाचौंध का वर्णन किया है, जहाँ भारतीय नौजवान उच्च शिक्षा और पैसे कमाने के लिए पलायन कर रहे हैं।

मूल शब्दः विदेशी चकाचौंध, मध्यवर्गीय नवयुवक, संस्कृति के प्रभावस्वरूप

आज आदर्शों और कर्त्तव्यों की बलि देकर पैसा कमाने के लिए विदेशों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। 'सुनो समित, सुनो सुलभ' कहानी में विनी का पति समित शोध करने तथा पैसा कमाने के लिए कनाडा चला जाता है, जिसके कारण विनी को अपने चार साल का बेटा सुलभ के साथ अकेला रहना पड़ता है। उसका पति हर हफ्ते प्यार भरा खत भेजता है लेकिन धीरे–धीरे पति के स्वभाव में बदलाव आने लगता है। अब वह पत्नी के साथ केवल दोस्ती का रिश्ता रखने की बात कहता है और किसी दूसरी नारी के साथ अपने संबंध बनाता है। समित सलाह देता है कि बेटे को ठीक से पढ़ाये और खत में लिखता है, ''एक कलीग छुट्टी पर जा रहे हैं। गाइड यह पोस्ट ऑफर कर रहे हैं। ऐसे मौके बार–बार नहीं आते। पचासों डालर की हर हफ्ते अर्निंग–खुशनसीब हूँ मैं! हाँ, पैसे हर वादे के मुताबिक तुम्हारे पास पहुँचते रहेंगे। तुम्हें शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। सुलभ के देखभाल में कोई कसर न रहने...।" इस घटना से विनी को धक्का लगता है लेकिन वह आत्मविश्वास के बल पर नौकरी करके सुलभ को बड़ा करने की ठान लेती है। जब सुलभ बड़ा होता है तब उसके पिता उसे भी कनाडा पढ़ने के लिए बुलाता है। समित खत में लिखता है, ''सुलभ के लिए यहाँ कुछ बहुत अच्छी वैकेंसीज निकल सकती हैं, बशर्ते वह आने को तैयार हो। मेरे खयाल से उसके हक में यही अच्छा होगा।'' विनी चाहकर भी अपने बेटे को रोक नहीं पाती है और बेटा भी अपनी माँ को अकेला छोड़कर पिता के पास कनाडा चला जाता है। इस प्रकार विदेशी चकाचौंध के बढ़ते कदमों ने भारतीय युवकों को अपनी ओर आकर्षित करना शुरू कर दिया है।

पश्चिमी देशों की संस्कृति के प्रभावस्वरूप भारत का व्यक्ति विशेष अपने माज और संस्कृति को त्याग कर नवीनता को धारण करने के लिए उत्सुक रहता है लेकिन भारतीय समाज से कहीं न कहीं, किसी भी ढंग से जुड़ा भी रहना चाहता है। इसी दुविधा में व्यक्ति बीच में फंस कर रह जाता है। 'गुजरती हदे' कहानी में कथाकार ने भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच उलझे विनय नामक युवक का चित्रण किया है। विनय अमेरिका में एलिस से शादी कर लेता है, जिसके कारण माँ और बड़ा भाई बेहद नाराज होते हैं। अब एलिस से तलाक हो चुका है। विनय दस साल बाद अमेरिका से वापिस लौटता है, तो घर का माहौल अब पहले जैसा नहीं होता है। घर की हालत अधेड़ सी हो चुकी थी और विनय अपने आपको घर के उस माहौल के मुताबिक सहज नहीं कर पाता है। जब घर की समस्याओं का जिक्र होने लगता है तो विनय इन सबसे दूर भागने की सोचता है। उसे अपनी अमेरिका की जिंदगी ज्यादा अच्छी लगती है। इस तरह अंत में सबसे विदा लेकर प्लेन में बैठ जाता है और उसे लगता है, ''मैं एकदम असहाय होता चला जा रहा हूँ। नहीं जानता, किधर जाना है। बस प्लेन ऐसे ही आकाश के बीचों–बीच टँगा रहे–न मेरे घर की ढही मुँड़ेरों की तरफ लौटे, न बेतहाशा भागती एवं चकाचौंध भरी तेज रफ्तार जिंदगी की आरे बढ़े। आह मैं न आगे बढ़ सकता हूँ, न पीछे लौट सकता हूँ और न वहीं रह पा रहा हूँ जहाँ....।'' इस प्रकार युवावर्ग विदेशी चकाचौंध और भारतीय समाज के मध्य दुविधा में फंस जाता है। उसका मन किसी एक जगह टिक नहीं पाता है।

सूर्यबाला ने 'आखिरवीं विदा' कहानी में भी उस विदेशी चकाचौंध का वर्णन किया है, जहाँ भारतीय नौजवान अपने कर्त्तव्यों को भूलकर उच्च शिक्षा और पैसा कमाने के लिए पलायन कर रहे हैं। यह कहानी एक वृद्ध पति–पत्नी की सशक्त रचना है, जिनका बेटा विदेश से सात सालों के बाद चार दिन के लिए भारत लौटकर आता है। माँ–बाप अपने बेटे से बहुत सी प्यार भरी बातें करना चाहते हैं लेकिन कर नहीं पाते हैं। माँ को बचपन की बातें याद आती हैं, जिस पर बेटा सोचता है, ''तुम्हारे लिए आसान है माँ, निरन्तर पीछे की अतीतगामी यात्राएं...क्योंकि वर्तमान और सामने आते भविष्य का अकेलापन और सन्नाटा तुम्हें आतंकित करता है... इसलिए तुम निरन्तर चहल–पहल भरे अतीत में ही पनाह ढूढ़ती हो.... लेकिन मैं... मैं तो सिर्फ अतीत या वर्तमान में नहीं रुक सकता, मेरे लिए तो समय और उम्र चढ़ते हुए सूरज की सीढ़ियां हैं।'' इस प्रकार माँ–बाप की मन की बातें मन में ही रह जाती और आखिर बेटा अपने बूढ़े माँ–बाप को छोड़कर विदेश चला जाता है।

सूर्यबाला ने 'मानुष–गंध' कहानी में उन हजारों नवजवानों की छटपटाहट को मूर्त रूप प्रदान किया है, जो अपने देश में उचित शिक्षा व्यवसाय के अभाव में सैकड़ों मील दूर विदेश में उच्च शिक्षा और नौकरी करने के लिए मजबूर होते हैं। कहानी का नायक वैभव शुक्ला उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जाता है, पर वह मन से अभी तक अपने मुल्क से दूर नहीं हो पाता है। वह रात–दिन एक कर पढ़ता है। झोल सी सब्जी और अधगले पनीले चावल खाकर गुजारा करता है। पार्ट टाइम क्लासेज और जूनियर्स की कोचिंग लेकर ऐरोग्राम के पैसे जुटाता है। कभी वहाँ बसे हुए भारतीय परिवार बुलाते हैं तो उसे लगता है, ''बस तो गए, चाहे–अनचाहे परदेस में लेकिन हर एक के अंदर, हर लम्हें, कंदील–सा एक हिन्दुस्तान जगमगाता रहता है। भुलाने की कोशिश में और ज्यादा याद आता हुआ। उस बच्चे सा, जो सोने

का झूठ–मूठ अभिनय करता आँखें मुलकाता रहता है।'' इस प्रकार विदेश में रहते हुए भी अपने मुल्क की याद बार–बार सताती रहती है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि एक ओर जहाँ विदेशी भौतिक चकाचौंध भारतीय नौजवानों को अपनी ओर आकर्षित कर रही है, वहीं दूसरी ओर देश में उचित रोजगार का अभाव भी विदेशों की ओर पलायन के लिए मजबरू कर रहा है। 'सुनो समित, सुनो सुलभ' कहानी में समित अपनी पत्नी विनी और बच्चे को छोड़कर पैसे कमाने के लिए कनाडा चला जाता है और जब बेटा सुलभ बड़ा होता है, तब उसे भी पढ़ने के लिए विदेश बुलाता है। विनी चाहकर भी पति और बेटे को रोक नहीं पाती है। 'गुजरती हदें' कहानी में विनय विदेशी चकाचौंध और भारतीय समाज तथा संस्कृति के मध्य दुविधा में फंस कर रह जाता है। उसका मन किसी एक जगह नहीं टिकता है। 'आखिरवीं विदा' कहानी में नायक उच्च शिक्षा और पैसा कमाने के लिए अपनी वृद्ध माँ–बाप को छोड़कर विदेश चला जाता है। 'मानुष–गंध' कहानी में वैभव शुक्ला अपने देश में उचित शिक्षा व्यवसाय के अभाव में सैकड़ों मील दूर अमेरिका में उच्च शिक्षा और नौकरी करने के लिए मजबूर होता है। इस प्रकार कथाकार ने अपने कथा साहित्य में उस विदेशी चकाचौंध का वर्णन किया है, जहाँ भारतीय नौजवान उच्च शिक्षा और पैसा कमाने के लिए पलायन कर रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. सूर्यबाला, गृहप्रवेश
2. सूर्यबाला, दिशाहीन
3. सूर्यबाला, साँझवाती
4. सूर्यबाला, मानुष–गंध